BA - I Date Page - 1
Paper - 1 19/08/20
Unite - 2

Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/PT)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar Madhubani
Mail ID :- rajgopal7756@gmail.com

Basic Features of Indian Philosophy
भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ

भारतीय दर्शन में दो तरह की विचारधाराएँ हैं, एक वेद पोषक विचारधारा दूसरा वेद विरोधी विचारधारा। ये क्रमशः आस्तिक एवं नास्तिक विचारधारा के रूप में मानी जाती है। आस्तिक विचारधारा में सांख्य-योग, मीमांसा वेदांत, न्याय वैशेषिक आते हैं। वहीं नास्तिक विचारधारा के अन्तर्गत चार्वाक, जैन, और बौद्ध दर्शन आते हैं। जैन बौद्ध नास्तिक विचारधारा के अन्तर्गत है परन्तु कई बिन्दुओं पर आस्तिक दर्शनों के साथ मतैक्य है। इसका कारण यह है कि सभी विचारधाराएँ एक ही भौगोलिक परिवेश में उत्पन्न हुई है। इन पर भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों की स्पष्ट छाप है। चार्वाक दर्शन को छोड़कर भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ निम्न हैं।

(1) दुःखानुभूति एवं आध्यात्मिक असन्तोष से भारतीय दर्शन की उत्पत्ति :— यहाँ के सभी भारतीय दार्शनिक चार्वाक को छोड़कर संसार को दुःखमय मानता है। भारतीय दर्शन का विकास ही आध्यात्मिक असंतोष के कारण हुआ है। यहाँ के सभी दर्शन जीवन को दुःखमय एवं चराचर जगत, विश्व की घटनाओं तथा वस्तुओं को दुःख का कारण एवं उसके निवारण के लिए दार्शनिक चिंतन किया है। रोग मृत्यु, बुढ़ापा, ऋण, मिलन, वियोग, आदि दुःखों के कारण मानव सदैव दुःखी रहता है। इस प्रकार से जीवन के हर पल में मानव दुःखी रहते हैं दर्शन है। बुद्ध के प्रथम

आर्य समाज से लेकर सांख्य योग, मीमांसा वेदांत आदि सभी दर्शन जीवन को दुःख से भरा माना है। विश्व में तीन प्रकार के दुःख हैं - आध्यात्मिक दुःख, आधिभौतिक दुःख, आधि दैविक दुःख। आध्यात्मिक दुःख शारीरिक एवं मानसिक दुःखों का दूसरा नाम है। आधिभौतिक दुःख बाह्य जगत के प्राणियों से जैसे पशु और मनुष्य से प्राप्त होते है। इसके अन्तर्गत चोरी, डकैती, हत्या, आदि कुकर्म है। आधिदैविक दुःख जो अप्राकृतिक शक्तियों से प्राप्त होते हैं। जैसे भूत, प्रेत, बाढ़, अकाल भूकम्प आदि से प्राप्त दुःख इसके अन्तर्गत आते हैं। उपनिषद तथा गीता में भी विश्व की अपूर्णता का संकेत मिलता है। यहाँ के सभी दार्शनिक विश्व को दुःखात्मक चित्रण किया है।

पाश्चात्य दार्शनिकों ने भारतीय दर्शन के दुःखात्मक वर्णन के कारण इसे निराशावादी कहा है। निराशावाद के अनुसार संसार में आशा का सन्देश नहीं है। भारतीय दर्शन पर समग्र दृष्टिपात करते पर यह प्रमाणित होता है कि भारतीय विचारधारा में निराशावाद का खंडन हुआ है। यहाँ के सभी दार्शनिक विश्व को दुःखमय माना है लेकिन विश्व के दुःखों को देखकर चुप नहीं हो जाते हैं वे दुःखों के कारण जानने का प्रयास करते हैं। सभी दर्शन यह आश्वासन देता है कि मानव अपने दुःखों के दूर कर सकता है। दुःख निरोध को भारत में मोक्ष कहा गया है। चार्वाक को छोड़कर यहाँ के सभी दार्शनिक मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। यहाँ के सभी दार्शनिक मोक्ष प्राप्ति के अलग-अलग मार्ग का निर्देशन किया है। वहाँ बौद्ध दर्शन अष्टांगिक मार्ग के द्वारा मोक्ष प्राप्ति किया जा सकता है। वहीं जैन दर्शन मोक्ष को अपनाने के लिए त्रिरत्न की व्याख्या की है। भारतीय दर्शन में मोक्ष एवं मोक्ष मार्ग की विशद विवेचन के कारण इसे निराशावादी कहना भूल है। सभी दर्शन में दुःखों के मुक्ति के [illegible] का संकेत है।